राष्ट्र भाषा हिन्दी समस्याएं एवं समाधान

अखिलेश कुमार शर्मा
चौ. भरत सिंह डी.ए.वी. इन्टर कालेज
झबरेड़ा

वर्तमान राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भ में हिन्दी की स्थिति अत्यन्त विडम्बनापूर्ण हो गयी है। यद्यपि हिन्दी संविधान के अनुसार देश की राजभाषा है, लेकिन देश में राजनीतिक दलों की विचारधारा, उनकी गतिविधि और प्रशासन के प्रसंग में हिन्दी एक विचित्र स्थिति में फँसी हुई है, जिसमें उसका उपयोग तो सभी करना चाहते हैं लेकिन उससे सच्चे मन से प्रेम करने वाले बहुत कम है।

यह एक विडम्बना ही है कि पराधीनता काल में अंग्रेजी राजभाषा थी तब हिन्दी ने देश की सम्पर्क भाषा बन कर स्वतंत्रता आन्दोलन का सफल संचालन किया। लेकिन जब से हिन्दी राजभाषा के पद आसीन हुई है अंग्रेजी सम्पर्क भाषा के रूप में अपने प्रभाव क्षेत्र का निरन्तर विस्तार कर रही है तथा हिन्दी का प्रभाव हिन्दी भाषी राज्यों तक में क्रमशः क्षीण हो रहा है। कई हिन्दी पत्रिकाएं पाठकों के अभाव में बंद हो चुकी हैं तथा जो बन्द नहीं हुई हैं उन्हें बाजार में ढूंढना पड़ता है क्योंकि अंग्रेजी पत्रिकाओं की भाँति यह हर स्टाल पर उपलब्ध नहीं होती। छात्रों के पास समय नहीं है कि वे मात्र हिन्दी की उन्नति एवं प्रगति के लिए हिन्दी पढ़ें, क्योंकि हिन्दी के सहारे उन्हें जीवन में सफलता एवं उन्नति की संभावना नहीं दिखाई देती, पर अगर अंग्रेजी का अच्छा ज्ञान है तो अवसरों की कोई कमी नहीं। तो क्या हिन्दी सक्षम एवं समर्थ भाषा नहीं है जो चुनौतियों को स्वीकार कर सके ? संभवतः ऐसा नहीं है। अगर ऐसा होता तो यह भाषा भी लुप्त हो गई होती। एक हजार वर्षो की प्रतिकूल परिस्थितियों में हिन्दी ने न केवल अपना अस्तित्व कायम रखा, अपितु निरन्तर प्रगति भी की।

हिन्दी की सर्वश्रेष्ठ रचनाएं संभवतः भारत के पराधीनता काल की ही है। हिन्दी के ऊपर भी सदैव दबाव बना रहा किन्तु अपनी श्रेष्ठता के कारण हिन्दी न तो कभी असफल हुई, न भविष्य में ऐसी कोई संभावना है। परन्तु इस शुभ विचार से संतोष कर लेना न तो हिन्दी और न ही राष्ट्र के लिए शुभ संकेत है।

हिन्दी स्वाधीनता आंदोलन के दौरान राष्ट्रभाषा के रूप में विकसित हुई। महात्मा गाँधी ने 1909 में "हिन्द स्वराज" में स्पष्ट रूप से लिखा था कि "हिन्दी ही भारत की राष्ट्र भाषा हो सकती है।" उन्होंने हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने के लिए अथक प्रयत्न भी किया। इतना ही नहीं उनके बाद में स्वाधीनता आंदोलन और भारतीय नवजागरण का नेतृत्व करने वाले अधिकांश महत्वपूर्ण विचारकों और लेखकों ने हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार किया था।

यह सच है कि 1965 में, जब हिन्दी को राजभाषा के पद पर आरूढ़ होना था तब तमिलनाडु में उग्र विरोध हुआ परन्तु अन्य राज्यों में स्थिति पर्याप्त भिन्न थी और कुछ अहिन्दी भाषी राज्य तो हिन्दी को स्वाभाविक स्थान पर सुशोभित देखना चाहते थे। पर तमिलनाडु की राजनीतिक स्थिति भिन्न थी और द्रमुक किसी भी कीमत पर सत्ता हासिल करना चाहती थी।

पुस्तकालय
राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रुड़की

पिछले पन्द्रह-बीस वर्षो में जिस तरह के लोग राजनीति और शासन में आये हैं और प्रभावशाली बने हैं, उनके लिए हिन्दी, हिन्दुस्तान की अस्मिता का प्रमाण नहीं, बल्कि एक सुविधा की चीज है, जिसको अन्य बेहतर सुविधा की चीज पाकर बदला जा सकता है। जब से भूमण्डलीकरण की प्रक्रिया तेज हुई है और इस देश में बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का आना बढ़ा है, तब से एक बार फिर भारत के सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन में हिन्दी की तुलना में अंग्रेजी भाषा का महत्व बढ़ा है। आजकल मुक्त व्यापार और भूमण्डलीकरण के समर्थक एक ओर अंग्रेजी के माध्यम से अन्तर्राष्ट्रीय होने और बनने की कोशिश कर रहे हैं तो दूसरी ओर हिन्दी को पिछड़ेपन का प्रतीक समझते हैं। इस प्रवृत्ति को बढ़ावा देने के लिए हिन्दी क्षेत्र के बुद्धिजीवियों की संकीर्णता, जड़ता और रूढ़िवादिता भी जिम्मेदार है।

आज हिन्दी की वर्तमान दशा या दुर्दशा का एक महत्वपूर्ण कारण सरकार की भाषा नीति भी है। इसके कारण ही हिन्दी का सरकारीकरण हुआ है और वह मात्र अनुवाद की भाषा बनकर रह गयी है। सरकार जिस रूप में हिन्दी को लाने और लागू करने की कोशिश कर रही है, वह भाषाओं की स्वाभाविक विकास प्रक्रिया के अनुकूल नहीं है। हिन्दी का विकास, हिन्दी क्षेत्र की लोक भाषाओं से जुड़कर होना चाहिए। राष्ट्र को मजबूत बनाने के लिये राष्ट्र भाषा हिन्दी के प्रति उपेक्षापूर्ण व्यवहार त्यागना पड़ेगा। इसे सक्षम बनाने के लिये शासक वर्ग एवं भारतीय जनता का सम्मिलित सहयोग अपेक्षित है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि हिन्दी के प्रति आदर्शवादी दृष्टिकोण के स्थान पर व्यवहारिक दृष्टिकोण अपनाया जाये क्योंकि हिन्दी केवल कागजों पर ही राष्ट्रभाषा बनकर रह गई है। इसे पुनः राष्ट्रभाषा के पद पर सुशोभित करने के लिए देश एवं समाज का समन्वित सहयोग अनिवार्य है।

****

पुस्तकालय
राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रुड़की